अभ्यास पत्रक

पाठ – तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. गद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"'तीसरी कसम' कितनी ही महान फिल्म क्यों न रही हो, लेकिन यह एक दुखद सत्य है कि इसे प्रदर्शित करने के लिए बमुश्किल वितरक मिले… लेकिन इस फिल्म को खरीदने वाला कोई नहीं था।"

1. 'तीसरी कसम' जैसी श्रेष्ठ फिल्म को प्रदर्शित करने में क्या कठिनाई आई?

उत्तर - .....

.....

2. फिल्म में ऐसे कौन-कौन से तत्व थे जो इसे सफल बना सकते थे?

उत्तर - .....

.....

3. इसके बावजूद वितरकों ने फिल्म में रुचि क्यों नहीं दिखाई?

उत्तर - .....

.....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** 'तीसरी कसम' फिल्म में करुणा का सुंदर चित्रण है।
   कारण: शैलेंद्र ने भावनात्मक दृश्य के माध्यम से समाज को झकझोरने की कोशिश की।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

5. **कथन:** राजकपूर ने 'तीसरी कसम' में हिरामन की भूमिका बिना पारिश्रमिक के निभाई।
   कारण: वे शैलेंद्र के अभिनय को सुधारना चाहते थे।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

3. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. 'तीसरी कसम' फिल्म किस साहित्यिक रचना पर आधारित थी?
   (क) मारे गए गुलफाम (ख) पंच परमेश्वर (ग) बड़े घर की बेटी (घ) पत्रों के संवाद

7. 'तीसरी कसम' के निर्माता कौन थे?
   (क) राजकपूर (ख) शंकर-जयकिशन (ग) शैलेंद्र (घ) वहीदा रहमान

8. 'तीसरी कसम' फिल्म को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?
   (क) दादा साहेब फाल्के (ख) राष्ट्रपति स्वर्णपदक (ग) फिल्मफेयर (घ) नेशनल स्टार अवार्ड

9. किस फिल्म समीक्षक के अनुसार 'तीसरी कसम' राजकपूर के अभिनय जीवन की सर्वोत्तम फिल्म है?
   (क) अज्ञेय (ख) फणीश्वरनाथ रेणु (ग) लेखिका (लेख) (घ) नहीं बताया गया

10. शैलेंद्र को किस गीत के अंतरे की पंक्ति के लिए जयकिशन ने बदलने को कहा था?
    (क) मेरा जूता है जापानी... (ख) सजनवा बैरी हो गए हमार...
    (ग) प्यार हुआ इकरार हुआ है... (घ) लाली-लाली डोलिया...

eGyanArchive

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. लेखिका ने 'तीसरी कसम' को 'सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' क्यों कहा है?

उत्तर - .....

.....

.....

12. शैलेंद्र ने अपने गीतों में किस प्रकार की संवेदनाएँ प्रस्तुत की हैं?

उत्तर - .....

.....

.....

13. शैलेंद्र को फिल्म निर्माता के रूप में क्यों अयोग्य माना गया?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. 'तीसरी कसम' एक फिल्म नहीं बल्कि जीवन के प्रति सजीव संवेदना का दस्तावेज़ है – इस कथन की पुष्टि पाठ के आधार पर कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "शैलेंद्र एक संवेदनशील कवि थे जिन्होंने फिल्म निर्माण को एक साधना की तरह जिया" – इस कथन की पुष्टि पाठ 'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' के आधार पर कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. वितरक नहीं मिल रहे थे क्योंकि फिल्म संवेदना-प्रधान थी, जिसे व्यावसायिक लाभ की दृष्टि से कमजोर माना गया।
2. इसमें राजकपूर, वहीदा रहमान, शंकर-जयकिशन जैसे बड़े नाम और लोकप्रिय गीत थे।
3. फिल्म की संवेदना और गहराई व्यावसायिक सोच वालों की समझ से परे थी।
4. (क)
5. (ग)
6. (क)
7. (ग)
8. (ख)
9. (ग)
10. (ग)
11. क्योंकि इस फिल्म में शब्द, भाव, संगीत और अभिनय एक ऐसी भावनात्मक लय में बंधे हैं जैसे कोई कविता।
12. शैलेंद्र के गीतों में करुणा, संघर्ष, स्वाभिमान और गहराई है – वे भावनाओं को सरल शब्दों में प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करते हैं।
13. शैलेंद्र भावुक थे, व्यावसायिक समझ से दूर – इसलिए प्रचार, वितरण, लाभ आदि के व्यावहारिक पक्षों में वे कमजोर पड़ गए।

14. 'तीसरी कसम' मात्र एक मनोरंजन फिल्म नहीं थी, यह जीवन की सच्चाइयों, संवेदनाओं और संबंधों को बड़ी सादगी से चित्रित करने वाली कृति थी। शैलेंद्र ने इसमें साहित्य, संगीत और भावों का ऐसा समावेश किया कि यह फिल्म एक गहरे जीवन-दर्शन का दस्तावेज़ बन गई। हिरामन और हीराबाई जैसे पात्र आम लोगों की गहराई को दर्शाते हैं। इस फिल्म में नाटकीयता नहीं, बल्कि जीवन का सहज बहाव था। दर्शकों को यह फिल्म मनोरंजन के साथ-साथ सोचने की प्रेरणा देती है – यही इसे सजीव बनाता है।

15. शैलेंद्र केवल गीतकार नहीं थे, वे एक संवेदनशील कवि थे जो फिल्म निर्माण को व्यवसाय नहीं बल्कि साधना मानते थे। 'तीसरी कसम' इसका प्रमाण है। उन्होंने इस फिल्म को अपनी भावनाओं से गढ़ा – नायक के रूप में राजकपूर, संगीत में शंकर-जयकिशन और कहानी में रेणु के साथ उन्होंने एक ऐसा चित्र रचा जिसमें बाजार नहीं, भावना प्रधान थी। उन्होंने कभी दर्शकों की कमज़ोरियों के अनुसार फिल्म नहीं बनाई, बल्कि उन्हें ऊँचा उठाने का प्रयास किया। शैलेंद्र ने यह फिल्म अपने आत्म-संतोष के लिए बनाई, लाभ के लिए नहीं। यही वजह है कि फिल्म व्यवसायिक रूप से असफल रही, पर आज भी एक कालजयी कृति मानी जाती है। शैलेंद्र का यह प्रयास एक सच्चे कवि की साधना का उदाहरण है।